साँची

गौतम बुद्ध

अपने मध्यप्रदेश में, भोपाल के पास एक जगह है साँची। इसे मध्यप्रदेश के नक्शे में ढूँढो। यहाँ बहुत सारे स्तूप हैं। साँची के स्तूपों के बारे में जानने से पहले गौतम बुद्ध के बारे में पढ़ें। ये स्तूप बुद्ध के शिष्यों से संबंधित हैं।

गौतम बुद्ध कौन थे

आज से 2500 साल पहले की बात है। हिमालय पर्वत के तलहटी में कपिलवस्तु नाम का शहर था। उसमें शाक्य नाम के लोग रहते थे। इनका कोई राजा नहीं था। हर परिवार का मुखिया अपने आपको राजा कहता था। सब मुखिया मिलकर कपिलवस्तु का राजकाज चलाते थे, इनमें से एक थे शुद्धोधन। इनकी पत्नी थी माया और एक लड़का था जिसका नाम सिद्धार्थ था। यह परिवार काफी अमीर था। अन्य धनी लड़कों की तरह सिद्धार्थ भी हर तरह की सुख–सुविधा, ऐश और आराम की ज़िंदगी बिता रहा था। सिद्धार्थ की शादी हुई फिर एक लड़का भी हुआ। खाते–पीते आराम से समय बीतता गया।

29 साल की उम्र में सिद्धार्थ यह सोचने लगे कि अपने पास सब कुछ हो, सब स्वस्थ हो तो सब खुश रहते हैं। पर अपना कोई बीमार पड़ता है, तो बहुत बुरा लगता है, बुढ़ापे में किसी को तकलीफ हो तो अच्छा नहीं लगता, कोई मर जाता है तो बहुत दुख होता है। वे सोचने लगे कि कैसे बचा जाए। ऐसा क्या करना चाहिए कि अपने मन में इन सब बातों से दुख न हो। इसका जवाब उनके आस–पास के लोग नहीं दे पाए। तो सिद्धार्थ अपना घर छोड़ कर जवाब ढूँढने निकल गए। उनके माँ–बाप, पत्नी ने खूब रो–धोकर उन्हें मनाया, रोकने की कोशिश की पर वो नहीं माने। सिद्धार्थ ने अपना सिर और दाड़ी मुंडवाकर, गेरूए रंग के कपड़े पहने और गाँव–गाँव, जंगल–जंगल घूमने लगे। कभी और साधुओं से मिल कर अपने सवालों पर बातचीत करते। कभी बैठकर इसके बारे में सोचते पर वे संतुष्ट नहीं हुए।

वे एक पीपल के पेड़ के नीचे कई दिनों तक चिंतन करते रहे। इन सब बातों के बारे में सोचते रहे। फिर उन्हें कई बातें समझ में आईं। अपने सवालों का उत्तर सूझा। इससे उनके मन को गहरी शांती मिली। अच्छा लगा। वे बुद्ध कहलाने लगे। *बुद्ध, यानी सच्चाई जानने वाला।*

सिद्धार्थ किन बातों से परेशान रहे?

क्या तुम भी कभी कुछ बातों से परेशान होते हो? किस तरह की बातों से?

अब बुद्ध ने सोचा कि जो बातें उन्हें समझ में आई हैं वो और लोगों को भी समझानी चाहिए। उन्होंने जगह–जगह जाकर, कई लोगों से मिलकर उनको अपने विचार सुनाए। राजा, पंडित, व्यापारी

किसान, कारीगर आदि सभी तरह के लोगों से बातचीत होती थी। जिनको उनकी बातें सही लगतीं वे उनके शिष्य बन गए। वे भी अपने घर छोड़कर बुद्ध के साथ और लोगों को समझाने निकल पड़े।

बुद्ध की बातों को मानने वाले लोग बौध कहलाने लगे।

अस्सी साल की उम्र में बुद्ध मर गए। उनके शरीर को जलाया गया और उनकी अस्थियों (शरीर की कुछ हड्डियाँ) को उनके शिष्य अलग–अलग जगह ले गए। वहाँ उन्हें ज़मीन में गाड़कर ऊपर मिटटी और पत्थर का ढेर या गुंबद बनाया। ऐसे गुंबद को स्तूप कहते हैं। जब बुद्ध के शिष्य मरे तो उनकी अस्थियों पर भी स्तूप बने।

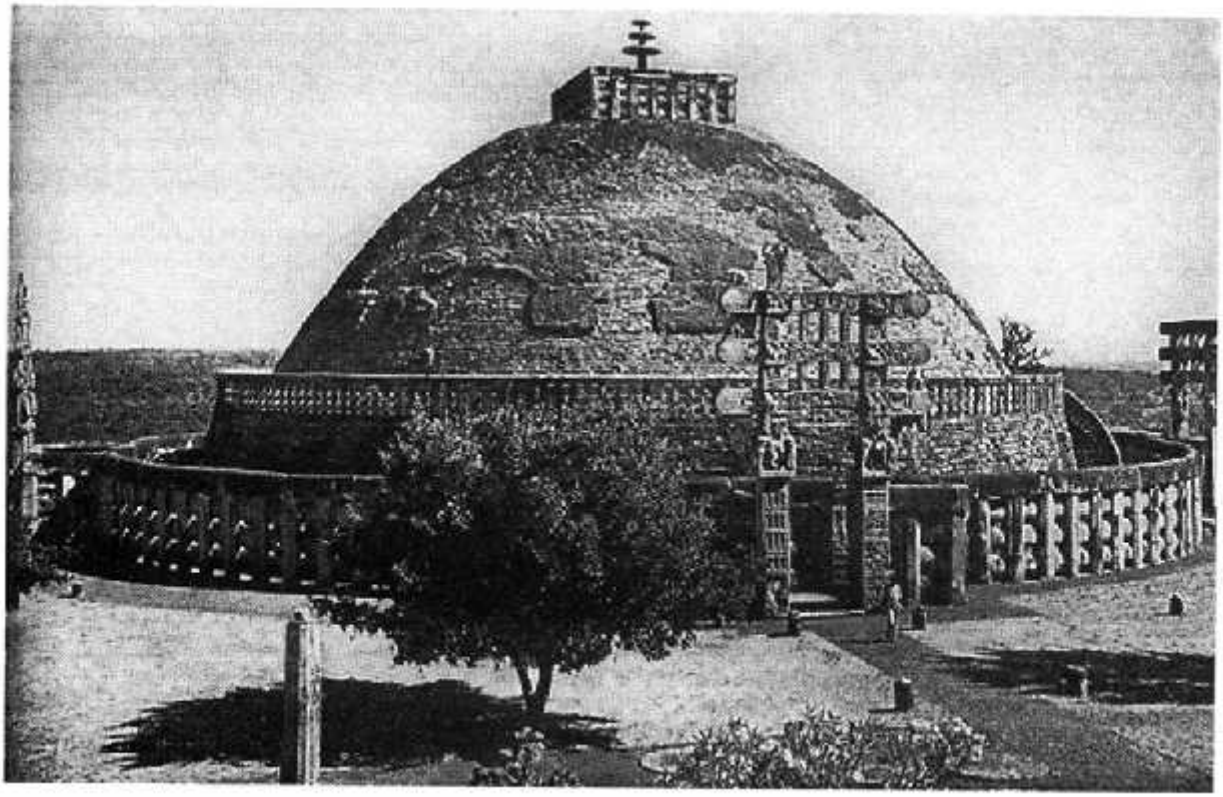

साँची का सबसे बड़ा स्तूप

साँची के स्तूप

इसी तरह के स्तूप साँची में भी हैं। यहाँ एक पहाड़ी पर पत्थर की कई इमारतें बनीं है। ऊपर के चित्र जैसी। इन्हें स्तूप कहते हैं। ऐसे तीन बड़े स्तूप हैं यहाँ। इन स्तूपों में गौतम बुद्ध के शिष्यों और बौध संतों की अस्थियाँ रखीं थीं। स्तूपों में पत्थर के एक डिब्बे में ये अस्थियाँ रखी गई थीं। फिर ऊपर से यह स्तूप बनाया गया है। बौध धर्म को मानने वाले लोग, यहाँ आते हैं, इन स्तूपों के चारों तरफ घूमकर परिक्रमा लगाते हैं और इनकी पूजा करते हैं।

स्तूप की तस्वीर देखकर उसके बारे में लिखो। अपनी कॉपी में उसका विवरण लिखो।

अस्थियों का डिब्बा

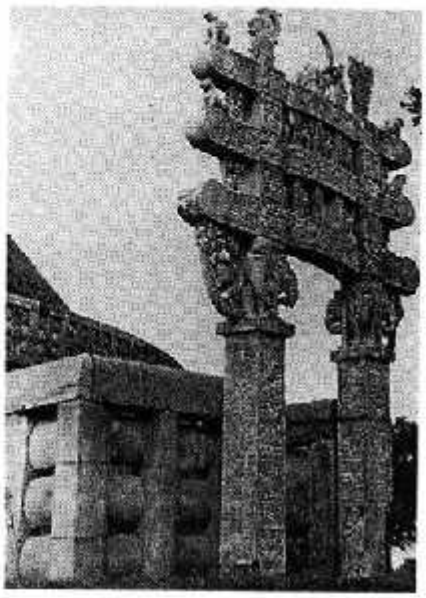

तोरण द्वार

– तुमने मंदिर देखा है। इस स्तूप और मंदिर में क्या फर्क और क्या एक जैसी बातें समझ में आती हैं।

–तुम कभी किसी यात्रा पर गए हो? किसी ने मज़ार देखी हो तो वो सबको बताओ–कैसी बनी थी, स्तूप जैसी या कुछ अलग ।

तोरण द्वार

स्तूप के चारों दिशाओं में एक एक तोरण द्वार (सजा हुआ दरवाजा) बना है। हर तोरण द्वार पर पत्थर को काट कर गौतम बुद्ध से जुड़ी हुई अलग–अलग कहानियों (घटनाओं) के दृश्य बनाए गए हैं। पत्थर काटने वाले शिल्पियों ने बहुत मेहनत की होगी न– चित्र देखो।

साँची के पास एक शहर है विदिशा। यह आज से 2000 साल पहले भी बसा था। उन दिनों यहाँ बौध धर्म को मानने वाले कई व्यापारियों ने ये तोरण द्वार बनाये थे।

नीचे दिए गए चित्र में बुद्ध की उस यात्रा का वर्णन है जब वे अपना घर छोड़कर निकल रहे थे।

साँची के स्तूप के द्वार पर बनी नक्काशी । इसमें तुम एक किले की दीवार देख सकते हो। किले के बाहर एक घोड़े पर बुद्ध बैठकर जा रहे हैं। इसमें बुद्ध की मूर्ति तो नहीं बनी हुई है मगर घोड़े पर छत्री बनी हुई है। यह छत्री इस बात का संकेत है कि घोड़े पर बुद्ध बैठे हैं। साथ में बुद्ध का एक नौकर भी जा रहा है। थोड़ी दूर पर वे उतरकर पैदल निकल जाते हैं और घोड़े और अपने नौकर को वापस भेज देते हैं। चित्र में पैरों के चिन्ह बने हैं– ये बुद्ध के पैर हैं जिनके आगे उनका नौकर सर झुकाए बैठा है। वापस लौटते घोड़े और नौकर को पहचानो। क्या अन्त में भी घोड़े पर छत्री है।

महाकपि जातक

ऐसा कहते हैं कि इस जन्म से पहले गौतम बुद्ध ने कई बार जन्म लिया था। कभी वे हाथी बने, कभी वे बंदर, कभी राजकुमार, कभी अंधे माँ–पिता के बेटे। चित्र में उनके बंदर वाले जन्म की कहानी है।

एक बार गौतम बुद्ध ने बंदर के रूप में जन्म लिया। उसका नाम था महाकपि। यह बंदर अस्सी हज़ार बंदरों का नेता था। सभी गंगा नदी के किनारे रहते थे। नदी के किनारे आम के पेड़ों के फल तोड़कर अपना पेट भरते थे। उनमें से एक पेड़ के फल बहुत मीठे थे। उस शहर के राजा को इस पेड़ की खबर लगी। उसने अपने सैनिकों को भेजा कि वे उस पेड़ के सारे आम तोड़कर लाएँ। सैनिकों ने पेड़ को घेर लिया। बंदरों ने उन्हें रोकने की कोशिश की। तो सिपाहियों ने उन्हें मारना शुरू कर दिया।

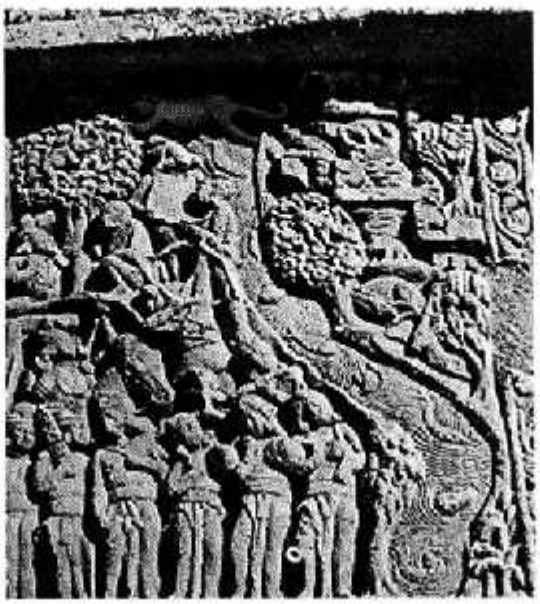

स्तूप के पश्चिम के तोरण द्वार पर गौतम बुद्ध के बारे में इस कहानी का चित्र बना है

सारे बंदर इधर–उधर भागे। कुछ चट्टानों के पीछे छिप गए। बंदरों के नेता महाकपि ने अपने दोस्तों को भागते देखा तो सोचा कि अगर सब बंदर नदी के दूसरी तरफ चले जाएँ तो बच सकते हैं। पर नदी को कैसे पार करें। महाकपि ने एक लंबा बाँस तोड़ा। इसके एक सिरे को एक पेड़ से बाँधा और दूसरे को अपनी कमर से। और फिर छलाँग लगाकर नदी के दूसरे किनारे पर कूद पड़े। यह सोचा कि बाँस को उधर भी एक पेड़ से बाँध दें तो एक पुल बन जाएगा। पर बाँस छोटा पड़ गया। तो महाकपि ने झट से एक पेड़ की डाली पकड़ ली। बाँस और उनका शरीर मिलाकर एक पेड से दूसरे पेड़ तक पुल तैयार हो गया।

बंदर इस पर चढ़ कर नदी पार आ गए और सिपाहियों से बच गए। पर उनमें से एक बंदर महाकपि से जलता था। उसने अच्छा मौका देखा। जब बाँस से चलकर महाकपि के ऊपर आया तो उसने उनके शरीर पर भयंकर छलाँग लगाई जिससे उनका दिल फट गया और वे नीचे आ गिरे। यह सब देखकर राजा का हृदय पसीज गया। उसने सोचा– इसने पशु होकर भी अपनी जान की परवाह नहीं की और अपने साथियों को बचाया। इसको मारना सही नहीं होगा। इसे अपने साथ ले जाकर पालूँगा। वह महाकपि को बड़े प्यार से उठाकर लाया उसे नहलाया, खिलाया–पिलाया, आराम से लिटाया फिर पूछा– " महाकपि, तू ने जो इन्हें बचाने के लिए अपने उपर से पार उतारा, तो तू इनका क्या लगता है और ये तेरे क्या लगते हैं।"

यह सुनकर महाकपि ने राजा को समझाया "जिन बंदरों को तेरे सिपाहियों ने डराया है, उनका मैं राजा हूँ। मैंने इतनी मेहनत से अपने शरीर को कष्ट देकर इन्हें नदी के पार पहुँचाया और ये बच गए। इसलिए अब मुझे कोई कष्ट नहीं महसूस हो रहा। मरने का दुख भी नहीं है। मैंने जिन पर राज्य किया उनको सुख पहुँचाया।"

महाकपि ने फिर राजा से कहा, "राजा, यह तेरे लिए सीखने की बात है– कि जो बुद्धिमान राजा होता है उससे उसके राज्य को, सेना को, उसके राज्य में रहने वाले लोगों को सबको सुख पहुँचना चाहिए।" इतना समझाने के बाद महाकपि मर गया। राजा ने महाकपि का अंतिम संस्कार राजाओं की तरह का किया।

एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक पुल कैसे बनाया गया होगा इसका चित्र बनाओ।

पत्थर पर यही कहानी खोदी गई है। इस चित्र में ढूँढो कहाँ क्या हो रहा है।